माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 8 मार्च 2015 को मोहाली में ''महिला स"ाक्तिकरण में मीडिया की भूमिका'' विषय पर आयोजित गोष्ठी में दिया गया भाषण।

हम सबके बीच में उपस्थित आज के इस आयोजन के Kye Note Speeker प्रोफेसर कमलजीत जी, राजयोगी ब्रह्माकुमार श्री रवीचन्द जी, हिंदुस्तान टाईम्स के सम्पादक श्री रमेश विनायक जी, स्टेट हैड दैनिक भास्कर पंजाब, चण्डीगढ, हिमाचल प्रदेश श्री दीपक धीमान जी, पंजाब स्टेट वुमैन कमीशन की चेयरपर्सन बीबी परमजीत कौर जी, इस केन्द्र की हैड जिन्होंने पूरा समय लगाकर, पूरा जीवन देकर इसको खड़ा किया है ब्रह्माकुमारी प्रेमलता देवी जी, ब्रह्माकुमारी अनिता देवी जी, आज के इस अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारी केन्द्र द्वारा आमंत्रित आप सभी महानुभाव, पत्रकार साथियो, सभी ब्रह्माकुमार भ्राता और ब्रह्माकुमारी बहनो!

आज का आयोजन तो महत्वपूर्ण है ही लेकिन इसको मीडिया के साथ जोड़कर और महत्वपूर्ण बना दिया गया है। इसका सकारात्मक पक्ष भी और क्रियात्मक पक्ष भी है। कभी अपने यहां कहा जाता था कि जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि। लेकिन अब वह इतना सार्थक नहीं रहा। अब उल्टा हो गया है–जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे पत्रकार। और आजकल देश और विश्व में एक और विधा चालू हुई है–खोजी पत्रकारिता। जब कोई विमान गायब हो जाता है, किसी समुद्र में गायब होता है तो खोजी जाते है उसका पता लगाने के लिए कि उसका मलबा कहां है। आजकल देश और विश्व में अगर कहीं कोई रहस्य होता है तो उसका पता लगाने के लिए पत्रकार को ही कहा जाता है कि आप पता लगाओ। इसलिए आज के दिवस के महत्व को और अधिक प्रतिपादित करने के लिए इसका एक क्रियात्मक पक्ष है कि उसको अगर हम साध लेंगे, उसको अगर हम संभाल लेंगे तो उसका जो सैद्धांतिक पक्ष है उसकी व्यावहारिकता पूर्ण हो जाएगी। इसीलिए इस केंद्र को धन्यवाद देना चाहता हूं कि बहुत अच्छा विषय आज के दिन चर्चा के लिए रखा है "Women empoverment: role of media."

आपने यह देखा होगा कि अपने यहां जितने कार्यक्रम होते हैं उनमें लगभग सभी कार्यक्रमों में दीपक जलाया जाता है, lightening of lamp, ज्योति जलाई जाती है। कभी आपने विचार किया कि ऐसा क्यों किया जाता है? सामान्यतः अगर प्रश्न पूछेंगे तो उत्तर मिलेगा कि शुभ कार्य करने के लिए ज्योति जलाना ठीक है। बात सही है। शुभ कार्य के लिए ज्योति जलाना तो ठीक है लेकिन इसका दूसरा और अर्थ है जो क्रियात्मक है, जो प्रत्येक आदमी को प्रभावित करता है। वह यह है कि किसी आयोजन के अंदर, किसी कार्यक्रम के अंदर जब आपको संदेश दिया जा रहा है, कुछ संकल्प जगाया जा रहा है, किसी चीज के लिए आपको प्रेरित किया जा रहा है और अपेक्षा की जा रही है तो दीया जलाकर हम अपेक्षा करते हैं कि आप अपने अंतःकरण के अंदर भी दीया जलाईये। यह अंतःकंरण के अंदर जो अंधेरा है, उस अंधेरे को दूर कीजिए, उसको प्रकाशित कीजिए। इसलिए इसका यह संदेश होता है कि जब आप कार्यक्रम में आएं और हम दीया जलाते हैं तो अपेक्षा आपसे यह करते हैं कि इस

संदेश को, इस संकल्प को लेकर अपने अंतःकरण के अंदर भी दीया जलाइए ताकि उसका क्रियात्मक पक्ष साकार हो सके, उसका प्रभाव दिख सके। ज्ञान तो हमारे पास बहुत है, हम बहुत कुछ सुनते भी हैं, पढते भी हैं और उसमें आजकल सो"ाल मीडिया तो बहुत ज्यादा सहयोग कर रहा है। लेकिन जो कुछ आपके पास ज्ञान है, जो कुछ आप सुनते हैं, जो कुछ आप पढते हैं, जो कुछ आप संदेश प्राप्त करते हैं उसको आप क्रियान्वित करते हैं क्या? आप उसको क्रिया रूप में बदलते हैं क्या? आपके हाथ उसके लिए खड़े होते हैं क्या? उसकी सबसे बड़ी कमी है। इसलिए आज के विषय को ध्यान में रखते हुए हमें इस ओर बढना चाहिए कि वास्तव में क्या हमको लगता है कि women empoverment की जरूरत है, महिला सशक्तिकरण की जरूरत है? अगर हमको ऐसा लगता है तो हमें किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। हमको किसी की बात मानने की जरूरत नहीं है। आपको, स्वंय को क्रियात्मक रूप में बदलने की जरूरत है।

यह कार्यक्रम तो सब जगह मनाया जा रहा होगा। सरकारें भी मना रही होंगी, संस्थाएं भी मना रही होंगी। लेकिन वास्तव में जो लोग यह कार्यक्रम मना रहे हैं उनको यह कार्यक्रम मनाने का अधिकार है क्या? यहां पर प्र"न आ गया कि हम कैसे पूछ सकते हैं कि उनको अधिकार है क्या? कार्यक्रम तो हर कोई मना सकता है। कानूनन रोक नहीं है। लेकिन मैं इसलिए पूछ रहा हूं कि जो इस कार्यक्रम को मनाते हैं, जो इस कार्यक्रम का समर्थन करते है, जो सोचते हैं कि महिला का सशक्तिकरण होना चाहिए, वे वास्तव में खुद उसमें योगदान कर रहे हैं क्या? खुद महिलाओं को अधिकार देने के पक्ष में है क्या? और कहीं पर भी मौका आता है तो महिलाओं को आगे करते हैं क्या? इसकी बहुत जरूरत है।

इस दृष्टि से जब मैं विचार करता हूं तो प्रजापति ब्रह्मकुमारी विश्वविद्याालय को यह पूरा अधिकार है, महिला सशक्तिकरण के कार्यक्रम को मनाने का। क्योंकि वि"व में यही एक ऐसी संस्था है जिसके सारे अधिकार महिलाओं के पास हैं। पुरूषों का महत्व कम है या मैं कम कर रहा हूं, ऐसा नहीं है। लेकिन कितना अधिकार प्राप्त है? वास्तव में अगर महिलाओं का सशक्तिकरण देखने को मिलेगा तो ब्रह्माकुमारी ई"वरीय विश्वविद्यालय के अंदर देखने को मिलेगा। इसलिए मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि अगर आप किसी भी आयोजन को, किसी भी कार्यक्रम को सशक्त बनना चाहते हैं, उसके लिए अगर ईश्वर का आशीर्वाद चाहते हैं, सफलता अगर उसमें चाहते हैं तो भगवान का आ"ाीर्वाद लो, भगवान की पूजा करो, दान–दक्षिणा करो, यज्ञ करो– यह सब जरूरी हो सकता है लकिन मैं इसको ज्यादा जरूरी नहीं मानता। किसी भी कार्यक्रम में सफलता अगर प्राप्त करनी है तो उसकी एक ही कुंजी है कि महिला को आगे करो। आप किसी परिवार के बारे में कल्पना कर लो, कोई भी परिवार सशक्त हो सकता है क्या? किसी भी परिवार का वातावरण शान्तिपूर्ण हो सकता है क्या? कोई भी परिवार जिसमें किसी भी तरह का कलह न हो ऐसा हो सकता है क्या? अगर महिला दुखी है?

परिवार के अंदर तो पुरूष भी होते हैं, महिलाएं भी होती हैं और बिना महिला के तो परिवार होता ही नहीं है। वह तो भूतों का डेरा होता है। आप कर सकते हैं ऐसे

परिवार की कल्पना जिसमें कोई महिला ही नहीं है? वह तो भूतों का डेरा हुआ, परिवार है ही नहीं वह। लेकिन उस परिवार के अंदर शांति, उस परिवार का सशक्तिकरण और वह परिवार अगर ईश्वर के नजदीक जाना चाहता है तो सबसे पहली शर्त यह है कि उस परिवार के अंदर महिला सुखी होनी चाहिए। यह मैं कोई शास्त्रीय बात नहीं बोल रहा हूं। यह सब अनुभव की बात बोल रहा हूं। आप भी जरा इसका अनुभव करो। आप जरा किसी परिवार को ले लो न जिसके अंदर महिला दुखी है। उस परिवार की कैसी हालत है? यह बात सिर्फ परिवार के लिए ही सही नहीं है, हरेक संस्था के लिए सही है। मैं जब ब्रह्माकुमारी के बारे में सोच रहा था तो इसका नाम भी अब विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय तो बहुत हैं। अपने देश के अंदर ही करीब 700 विश्वविद्यालय हैं। लेकिन यह विश्वविद्यालय उन 700 विश्वविद्यालयों जैसा नहीं है। यह विश्वविद्यालय ईश्वरीय है, जहां पर नर आता है और नारायण बन जाता है। इसलिए इस संस्था को कार्यक्रम करने का पूरा अधिकार है, महिला सशक्तिकरण का बहुत अच्छा संदेश इससे हमको प्राप्त होता है।

मैं बैठे–बैठे यहां पर सोच रहा था कि मैं कल भी एक कार्यक्रम में गया था। सीनियर सिटीजन वैलफेयर एसोसियेसन, मनीमाजरा के कार्यक्रम में। वहां पर जो कुछ बोला था मैं वह बात नहीं बोलूंगा, मैं दूसरी बात बोलूंगा। तो बैठे–बैठे मैं यह सोच रहा था कि पूरे विश्व के अंदर डंका बजाने का काम, जब देश गुलाम था, पूरे विश्व को जिसने लोगों को नतमस्तक करा दिया, पूरे विश्व में जिसने अपनी आध्यात्मिकता का डंका बजा दिया और जिसने विदेशी धरती पर जाकर यह सिद्ध कर दिया कि कोई भी सम्प्रदाय, कोई भी उपासना पद्धति, कोई भी रिलीजन अगर यह सिद्ध करना चाहता है कि पूरे विश्व के अंदर जितने रिलीजन हैं, जितनी उपासना पद्धति हैं, उनमें उसका रिलीजन सर्वश्रेठ है तो वह कुंए का मेंढक है। उसको पता ही नहीं है कि समुद्र कितना बड़ा होता है। तो ऐसा पूरे विश्व के अंदर विदेशी धरती पर डंका बजाने वाला इस हिंदुस्तान का महामानव था Spritual man जिसको आप स्वामी विवेकानंद के नाम से जानते हैं। वे इतना बड़ा करिश्मा कैसे कर गये? वे अधिकृत प्रवक्ता तो नहीं थे, 1893 में अमेरिका के ि”ाकागो में जो विश्व धर्म सम्मेलन हुआ, उसमें।

1893 में इसाईयों ने वह सम्मेलन इसलिए किया था कि हम यह सिद्ध कर देंगे कि ईसाई धर्म सभी धर्मों से सर्वश्रेठ है। और यह सबसे बड़े झगड़े की जड़ है। हर सम्प्रदाय इस कोि”ा”ा में है कि हम ही सही हैं, तुम गलत हो। और अपने को सही सिद्ध करने के लिए दूसरे को नकारना, घृणा करना, कत्लेआम करना, नष्ट कर देना। पूरे विश्व में धर्म सम्मेलन करके इसाई सम्प्रदाय यह सिद्ध करने चला था कि हम ही सर्वश्रेठ हैं। उसको पराजित करने वाले आखिर स्वामी विवेकानंद सफल कैसे हुए? क्योंकि वे अधिकृत वक्ता नहीं थे, उनको नहीं बुलाया गया था वहां पर।

स्वामी विवेकानंद जब दक्षिण भारत की यात्रा पर थे तब पता लगा कि बहुत बड़ा अनर्थ अमेरिका के ि”ाकागो में होने वाला है, जो वि”व के लिए अनर्थ है। उन्हें लगा कि बहुत गलत हो जाएगा तो वे अपनी यात्रा छोड़कर लोगों से चंदे का पैसा इकट्ठा करके अमेरिका गये। लेकिन वे अधिकृत प्रवक्ता नहीं थे। इतना बड़ा संकल्प, इतना बड़ा सपना लेकर वहां गये। लेकिन वे अधिकृत प्रवक्ता नहीं थे। वहां पर उनको प्रवेश

मिल नहीं सकता था। कोई उनको पूछ नहीं रहा था। यहां तक कि उनके जीवन की कथा इस तरह की है कि ठंड के मारे, ठंड से बचने के लिए काठ के खोखे में पूरी रात गुजारी। इस तरह के व्यक्ति सफल कैसे हो गये? कौन है इसके पीछे? तो पूरी जीवन की घटना को सुनेंगे तो उसके पीछे एक महिला है जिसने उनको प्रवेश दिलवाया।

यह तो एक संकेत के रूप में मैने घटना बताई है। आप जरा विचार करो कि आपकी सफलता के पीछे कौन–कौन हैं? आप अगर अच्छे पद पर पहुंचे हैं, आप अच्छे नेता बने हैं, आप अच्छे व्यापारी बने हैं, आप अच्छे वकील बने हैं, आप अच्छे डाक्टर बने हैं या इतने आप बड़े हो गए हैं, आप जरा विचार करो कि आपके इस बड़पन में, इस बड़े होने में, इस गौरव को प्राप्त होने में, इस महानता को प्राप्त करने में किस–किस का हाथ है? जरूर महिला खड़ी मिलेगी आपको। कई नेता तो दबी जुबान से महिला को कहते हैं कि आपकी कृपा से हो रहा है सब कुछ। आप सहयोग नहीं देती तो जाने क्या हो जाता। क्योंकि पुरूष का निकम्मापन भी उसकी पत्नी छिपाती है।

ऐसी ही स्त्री वहां पर भी हुई अमेरिका के अंदर। वह महिला वहां पर एक प्रोफेसर थी। वह एन.आर.आई थी। वह हिन्दुस्तान की थी। इसीलिए महिला सशक्तिकरण को स्पष्ट करने के लिए इस घटना का उल्लेख कर रहा हूं। वे स्वामी विवेकानंद रात को ठंड के कारण काठ के खोखे में ठिठुरते रहे। सुबह होते ही जब वे चले तो कुछ ठंड का असर था और कुछ ठीक से खाना नहीं मिला था, उसका भी असर था। तो अगर जीवन–चरित्र उनका पढेंगे तो घटना इस प्रकार है कि स्वामी विवेकानंद अमेरिका की सड़कों पर चलते–चलते बेहोश होकर गिर पड़े। कपड़े उनके भगवा थे। एक भगवा संन्यासी को इस तरह सड़क पर गिरे हुए देखकर उस महिला को दया आ गई और भागकर उनके पास गई। उसने स्वामी जी को उठाया और साथ में लेकर गई घर पर। होश में आए तो पूछा कि स्वामी जी क्या हुआ है आपको? उन्होंने अपने मन की व्यथा बताई। बहुत बड़ा अनर्थ हो रहा है। उसने कहा आप जाएंगे कैसे वहां पर? आपको तो अनुमति ही नहीं है? आपको तो एंट्री ही नहीं मिलेगी? आप जा ही नहीं सकते? उन्होंने कहा कि वह तो सही है लेकिन मुझे भगवान का काम करना तो है।

वह पूरी घटना इस तरह की है कि उस महिला का प्रभाव उस सभा के आयोजकों पर इतना अच्छा था कि उसने अपने प्रयास से 5 मिनट का समय स्वामी विवेकानंद को बोलने का दिलवाया कि आपको सभा के अंदर सिर्फ 5 मिनट का समय मिलेगा। अपनी तरह अगर स्वामी विवेकानंद ने सोचा होगा कि इतना बड़ा काम वे कर रहे हैं उसके लिए इतने कम समय? लेकिन 'The Great Hindu Monk of India' यह वि"ोषण मिला है उनको वहां पर, उस घटना के बाद। वह घटना इस तरह की है कि जो 5 मिनट का समय उनको मिला और उसमें जब बोलने के लिए कहा उनको कि आप बोलिए, उन्होंने स्वयं वर्णन किया है कि जब मैं बोलने के लिए उठा तो मेरे होंठ सूख रहे थे। क्या बोलूंगा? क्या बोलूंगा? लेकिन जब वे बोलने के

लिए खड़े हुए, जो पहले दो शब्द बोले उन्हीं दो शब्दों पर 5 मिनट तक तो तालियां ही बजती रहीं। उसी में समय पूरा हो गया। उनके शब्द क्या थे?

अब तक जितने वक्ता आते थे वे सब कहते थे अपने सम्बोधन में– ladies and jentlemen of America यह कहते थे। वही एक भारतवर्ष का संत था, जब वह बोलने के लिए खड़ा हुआ तो जितने सब बैठे हुए थे उनको संबोधित करते हुए उन्होंने कहा Brother's & Sister's of America. सब गौर से उसकी तरफ देखने लगे कि कौन है और कहां से आया है जो लेडीज एंड जैंटलमैन के स्थान पर ब्रदर्स और सिस्टर कह रहा है। जो सबको भाई मानता है, सबको बहन मानता है। भाई और बहन, यह भारत की देन है। अब जरा विचार करो कि आप भी किसी को सिस्टर कहिए तो उसको कैसा लगेगा? और उसी को लेडी कहिए तो उसको कैसा लगेगा? बहुत फर्क है। खैर यह तो साथ में बात आ गई, मैने कह दी। लेकिन इतनी बड़ी सफलता दिलाने में अगर कोई पीछे थी तो वह महिला थी।

यह बात सही है, जो कि हमारे वक्ताओं ने भी कही है कि भारतवर्ष के अंदर अगर हम महिला स"ाक्तिकरण की बात हम करते हैं तो यह बहुत बड़ा मजाक लगता है। क्योंकि यत्र नारी पूज्यन्ते, जहां नारी की पूजा होती है तत्र देवता रमन्ते। जिस स्थान पर, जिस समय पर, जिस संस्था में, जिस घर में नारी की पूजा होती है, नारी का सम्मान होता है वहीं पर देवता निवास करते हैं। यही तो अपनी देश की संस्कृति है। लेकिन बदले हुए परिवेश में, इस भौतिकवाद में, स्वार्थ की दुनिया में, हम सारे मूल्यों को भूले हुए हैं और मूल्यों के कारण अपनी संस्कृति को भी भूले हैं। और जैसा पूरे वि"व में हो रहा है वैसा भारत में भी हो रहा है। लेकिन आज की आव"यकता है कि महिलाओं को सम्मान दिया जाना चाहिए, उनकी शक्ति को पहचानना चाहिए। और नर से नारायण बनना है तो उसके लिए बहुत आव"यक चीज है कि आप शांति के रास्ते पर चलें, सद्भाव के रास्ते पर चलें, सहिष्णुता के रास्ते पर चलें। लेकिन इसको करने में एक बहुत बड़ी बात जो यहां पर स्थापित की जा रही है वह यह है कि इसमें मीडिया का रोल बहुत ज्यादा है। मीडिया का रोल कैसे है?

हमारे रमे"ा विनायक जी ने अपनी बात कही है। बहुत संक्षिप्त में बहुत अच्छी बात उन्होंने कही है। दीपक जी ने भी बहुत अच्छी बातें कही हैं। जो विकृतियां समाज के अन्य क्षेत्रों के अंदर हैं उनसे पत्रकार किस तरह दूर रहें उन्होंने यहां पर प्रतिपादित किया है। मैं दोनों को साधुवाद देता हूं। लेकिन मैं सबसे हटकर एक बात कहता हूं। मीडिया का रोल क्या है? आजकल देश में और वि"व में कोई भी चीज अगर आप करना चाहते हैं, सफलतापूर्ण करना चाहते हैं, योग्य वातावरण बनाना चाहते हैं तो उसके लिए सबसे प्रभावी चीज कौन सी है? आप कानून से कर सकते हैं क्या? नहीं। आप डर दिखाकर कर सकते हैं क्या? नहीं। आप कोई नियम बना देंगे तो भी यह नहीं होगा। सबसे प्रभावी चीज क्या है? सबसे प्रभावी चीज है पब्लिक ओपिनियन, यानीकि जनमत।

किसी भी बुराई को अगर आप दूर करना चाहते हैं तो आप पब्लिक ओपीनियन बनाईये। हम तो भ्रष्टाचार के बारे में भी कहते हैं कि भ्रष्टाचार आप कानून से नहीं रोक पाएगें। क्योंकि कानून बहुत कमजोर होता है। उसमें जिरह होती है। उसमें

व्याख्या होती है। कई चीजें होती हैं। और कानून के माध्यम से किसी को दंड देने में, न्याय प्राप्त करने में बहुत समय लग जाता है। इसलिए कानून उतना कारगर नहीं होता है।

इंग्लैंड के अंदर बहुत अच्छी कथा है। इंग्लैंड में जब राजा–महाराजा हुआ करते थे तो वहां एक शहर का जो राजा था वह 4 घोडों की बग्गी पर निकलता था। उस राजा को चिढाने के लिए उस शहर के अंदर जो नगर सेठ था, जो व्यापारी था, जिसके पास बे"ुमार दौलत थी, सबसे ज्यादा पैसा था, वह भी 4 घोडों की बग्गी पर निकलता था। कोई उसको शौक नहीं था। वह तो राजा को चिढाने के लिए निकलता था। तू राजा है न, 4 घोडों की बग्गी पर निकलता है? मैं भी 4 घोड़ों की बग्गी पर निकलूंगा। नहीं रोक सकते तुम। राजा ने कहा यह चिढाने के लिए ऐसा करता है, रोक सकते हैं क्या? तो राजा के सलाहकारों ने कहा कि रोक सकते हैं, कानून बना दो। तो राजा के हाथ में तो कानून होता है, कानून बना सकता है, सबसे बड़ा हथियार है। राजा ने कानून बना दिया कि आज के बाद नगर के अन्दर 4 घोड़ों की बग्गी पर सिवाय राजा के कोई नहीं निकलेगा और जो निकलेगा तो उसको सजा होगी। जैसी कानून की व्यवस्था होती है, बना दिया कानून।

आगे जब समय आया तो 4 घोड़ों की बग्गी पर राजा निकला तो नगर सेठ भी निकला। कानून का असर नहीं हुआ। कानून के हिसाब से राजा के लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया क्योंकि उसने कानून तोड़ा है। उसने कहा कि मैने कानून नहीं तोड़ा है। आपने कानून नहीं तोड़ा? सिद्व करो। उसने कहा कि कोर्ट में सिद्ध करूंगा। कोर्ट में पे"ा हुआ, नगर सेठ का वकील पे"ा हुआ। नगर सेठ के वकील से कहा गया कि आपके सेठ ने कानून तोड़ा है, इसके अनुसार उसको सजा होगी। वकील कहता है श्रीमान देख लीजिए उसने कानून नहीं तोड़ा है। कैसे नहीं तोड़ा है? कि जिस बग्गी में वह जा रहा था उसमें चार घोड़े नहीं थे। उसमें 3 घोड़े थे और एक घोड़ी थी।

अगर उसकी कानून से व्याख्या करो तो कानून तो नहीं टूटा भई। आपका कानून तो यह है कि 4 घोड़ों की बग्गी में राजा के सिवाय कोई नहीं निकलेगा। तो नगर सेठ निकल रहा है। लेकिन 4 घोड़े नहीं हैं। घोड़े तो 3 हैं, एक तो घोड़ी है। वह बरी हो गया। इसलिए अगर किसी भी चीज को क्रियात्मक, सकारात्मक रूप से लागू करना चाहते हो तो पब्लिक ओपिनयन सबसे बड़ा व स"ाक्त हथियार है। देखिए, आदमी चोरी करना चाहता है। आदमी रिश्वत लेना चाहता है। आदमी गलत काम करके धनवान या जो कुछ भी बनना चाहता है। लेकिन इसके साथ–साथ वह यह चाहता है कि मैं जो गलत काम कर रहा हूं उसका किसी को पता न लगे। यानि चोर भी चोरी करेगा लेकिन चोर कहलाना पसंद नहीं करेगा। अगर उसको पता लग जाएगा कि यह बात पता लग जाएगी तो वह यह काम नहीं करेगा और इसलिए पब्लिक ओपिनियन से हर आदमी डरता है।

आपके मन में भी अगर ऐसी चीज करने की इच्छा होती है और लगता है कि इस चीज का बच्चों को पता नहीं लगना चाहिए, पत्नी को पता नहीं लगना चाहिए। आप कोि"ा करते हैं न, यह कि ऐसे करो, काम तो हो जाए लेकिन पता न लगे

इनको। अरे दुनिया को तो छोड़ो, आप अपने घर में भी छिपाते है न? लेकिन आप तब तक छिपायेंगे जब तक आपकी पत्नी की, लड़के की निगाह में आपके बारे में ओपिनियन खराब नहीं होती। सही ओपिनियन पत्नी के मन में भी बना रहे, लड़के के मन में भी बना रहे, परिवार के अन्य सदस्यों में भी आपका ओपिनियन ठीक बना रहे, इसकी आप पूरी चिंता करेंगें। अगर यह खतरा हुआ कि ओपिनियन खराब होगा तो आप वह काम नहीं करेंगे। यह पब्लिक ओपिनियन बहुत बड़ी चीज है।

आप अगर किसी नेता को ठीक करना चाहते हो तो कानून से ठीक होगा क्या? पार्टी का जो अनु"ाासन है उसके डंडे से ठीक होगा क्या? उससे उतना ज्यादा नहीं होगा, थोड़ा–बहुत हो सकता है, डर पैदा हो सकता है। लेकिन अगर उस नेता के क्षेत्र की जनता के मन में उसका ओपिनियन खराब हो गया तो फिर वह नेता कहीं का नहीं रहेगा। क्यों? क्योंकि जनता ही उसका तिरस्कार कर देगी। जनता उसको पूछेगी ही नहीं। यह नेता ठीक नहीं है, यह श्रद्धा के लायक नहीं है, यह कुपात्र है। तो यह जनता का जो पब्लिक ओपिनियन है उससे हर कोई डरता है। इसलिए अपने दे"ा के उत्थान के लिए सबसे बड़ा हथियार अगर कोई है तो यह पब्लिक ओपिनियन है। पब्लिक ओपिनियन से तो सरकारें बदल जाती हैं। यह पब्लिक ओपिनियन बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए मैं यह कहना चाहता था कि पब्लिक ओपिनियन बहुत इफैक्टिव माध्यम है। इस पब्लिक ओपिनियन को जो चीजें बनाती हैं उनमें मीडिया का सबसे ज्यादा रोल है। जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे पत्रकार। बहुत बड़ा रोल है इस मीडिया का।

जो यह विषय का चयन है कि मीडिया का रोल क्या है women empowerment में, महिला स"ाक्तिकरण में? बहुत बड़ा रोल है। महिला स"ाक्तिकरण में नहीं, इस पब्लिक ओपिनियन को बनाने में। और 21वीं सदी जिसको भारत की सदी कहते हैं, हमारे पुराने महापुरूष भी कह गये हैं कि जब वि"व के अंदर 21वीं शताब्दी आएगी तो भारत की होगी। अगर भारत की वि"व में 21वीं सदी आपको बनानी है तो सबसे बड़ा काम यह है कि महिलाओं को आगे लाऐं। महिलाओं का सम्मान करें। घर–घर के अंदर उनको योग्य स्थान दें। और भारतवर्ष एक ऐसा दे"ा है जिसमें अगर ज्ञान चाहिए तो माता सरस्वती के पास जाना होता है। पैसा चाहिए तो माता लक्ष्मी के पास जाना होता है। आपको शक्ति चाहिए तो माता दुर्गा के पास जाना होता है। भारतवर्ष, यह पुरूष प्रधान दे"ा नहीं, यह महिला प्रधान दे"ा है। सारी शक्ति महिलाओं में निहित है। इसलिए हम सब अपने मन में इस ज्योति को जलाऐं, अपने आप को सुधारें, अच्छा व्यवहार करें, उस तरह का सोचें। मीडिया अगर तय कर लेता है तो योग्य वातावरण बनाने में योग्य पब्लिक ओपिनियन बनाने में, अगर जनमत गड़बड़ है तो उसको ठीक करने में, उसको प्योरीफाई करने में, उसको परिष्कृत करने में, मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है।

मेरे से पहले वक्ता बहुत अच्छी बात कह रहे थे कि आप विज्ञापन में, अन्य चीजों में, महिलाओं की फोटो का उपयोग करना बंद कर दें तो बहुत बड़ी चीज है। लेकिन कम से कम आप स्वयं यह संकल्प ले लें कि महिलाओं के प्रति योग्य सम्मान हम देंगें, अपने परिवार के अंदर वे सुखी रहें इसकी चिंता करेंगें और दे"ा के अंदर जितने

उपक्रम और आयोजन हैं उन आयोजनों के अंदर उनको योग्य स्थान मिलेगा तो बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

वैसे महिला स"ाक्तिकरण तो मुझे इस कार्यक्रम के अंदर देखने को ही मिला। वह इसलिए कि ब्रह्माकुमारी वि"वविद्याालय में हम सबने जो भाषण दिया है उन सबमें, सबसे अच्छा भाषण मुझे महिला कमीशन की चेयरपर्सन बीबी परमजीत कौर जी का लगा। जब वे बोलने के लिए खड़ी हुईं तो मैं सोच रहा था कि क्या बोलेंगी? पर बहुत अच्छा बोलीं। अंत में मैं एक बात और बता दूं कि पुरूष बोलता है तो कम प्रभाव पड़ता है और जब कोई महिला बोलती है तो ज्यादा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि पुरूष की तुलना में लोग महिला की तरफ श्रद्धा से देखते हैं। लेकिन महिलाओं को भी समझना चाहिए कि वे भी इस सम्मान के योग्य बनें। एक बात और है कि अगर कोई भी चीज आप चाहते हैं तो वह मांगने से नहीं मिलती, कमांड करने से मिलती है। डिमांड करने से कुछ नहीं मिलेगा। Do not be baggers, be marshals. कमांड करो। यह दुनिया झुकती है, झुकाने वाला चाहिए। यह दुनिया मानती है, मनाने वाला चाहिए। इसलिए कमांड करने वाला चाहिए।

अब तो मैं राज्यपाल हो गया। पॉलिटिकल पार्टी से मेरा संबंध नहीं है। लेकिन इससे पहले जब पॉलिटिकल पार्टी से संबंध था तो मैं अपनी पार्टी की महिला कार्यकर्ताओं से बात कर रहा था। उस समय मैने महिलाओं को कहा कि पुरूष लोग तो हार गये, भ्रष्टाचार से मुक्ति नहीं पा रहे। बहुत गड़बड़ करते हैं ये लोग। आप जरा संभालो कमान। आप ठीक करोगी। तो मानोगे, महिलाओं में से 2–3 महिलाएं खड़ी हो गईं हाथ उठाकर। मैने पूछा–क्या कहना है? उन्होंने कहा कि आप गलत कह रहे हैं। क्या गलत कह रहें हैं? उन्होंने कहा कि पुरूषों का कोई दोष नहीं हैं, भ्रष्टाचार तो हम ही कराते हैं। समझ में नहीं आया न? महिलाओं ने कहा पुरूषों का कोई दोष नहीं है, भ्रष्टाचार तो हम ही कराते हैं। हम ही ऐसी मांगें करते हैं, हम ही इस तरह की बात करते हैं। इसलिए सिद्धांततः सही होने के प"चात भी हमको भी कमांड करने की जरूरत है। और जिसको भी यह कमांड करने की जरूरत है उसको कमांड करें।

पुनः इस अच्छे आयोजन के लिए ब्रह्माकुमारी ई"वरीय वि"वविद्यालय को मैं धन्यवाद देता हूं। आप लोगों ने मुझे बड़े ध्यान से सुना इसलिए आपको भी धन्यवाद देता हूं। आप इस संदे"ा को लेकर जाएं और इसका अनुसरण करें, इसी अपेक्षा के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

जयहिन्द!